INTRODUCTION TO GOVERNMENT AND BINDING

LILIANE HAEGEMAN

Chapter 1 (Parts)

HINDI TRANSLATION AND READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR EKLAVYA, BHOPAL & NMRC, JNU BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

NOVEMBER 2012

इन्ट्रोडकशन टु गवर्नमेन्ट एन्ड बाइन्डिंग

लिलियन हेगेमान

Reading Guide

हेगेमान बताती हैं कि किसी भाषा का व्याकरण क्या है ? वो इस बात पर चर्चा करती है कि क्यों हमारे मस्तिष्क में मौजूद व्याकरण सिर्फ वाक्यों की सूची नहीं है और क्यों ये मानना ज़रूरी है कि व्याकरण नियमों का तंत्र है ।

इसके आगे हेगेमान तीन adequacy की चर्चा करती है जो है – observational adequacy, descriptive adequacy और explanatory adequacy. किसी भी सिद्धान्त के रचना के ये तीन स्तर है जिसमें explanatory adequacy सबसे सशक्त स्तर है । भाषा विज्ञान के क्षेत्र में जब कोई ऐसा सिद्धान्त तैयार होता है जो भाषा अर्जन के प्रक्रिया को समझा पाये तो तब वो सिद्धान्त explanatory adequacy हासिल कर लेता है ।

भाषा–अर्जन को समझाने में एक खास समस्या है Poverty of Stimulus की । ये समझाना मुश्किल है कि भाषा के इतने कम अनुभव के बावजूद बच्चे को भाषा का इतना सशक्त ज्ञान कैसे हो जाता है । कुछ अंग्रज़ी उदाहरणों से हेगेमान ये दिखाती है कि बच्चे के पास ऐसा भाषाई ज्ञान होता है जो उसने न कभी सुना हो न ही उसे सिखाया गया हो ।

हेगेमान फिर सार्वभौमिक व्याकरण के बारे में बताती है । बच्चे के भाषा अर्जन करने की क्षमता के पीछे सार्वभौमिक व्याकरण होता है । ये ऐसा व्याकरण है जो सभी भाषाओं का आधार है । हेगेमान सार्वभौमिक व्याकरण के कुछ नियमों की चर्चा करती हैं ।

हर भाषा पर लागू होने वाले नियमों के साथ–साथ सार्वभौमिक व्याकरण में कुछ नियम ऐसे भी है जो सब भाषा

पर लागू नहीं होते । इन्हें पैरामीटर कहते हैं । जब बच्चा अपनी भाषा का व्याकरण तैयार करता है तो वो अपने भाषा के अनुसार पैरामीटर चुन लेता है । भाषा अर्जन की प्रक्रिया में सार्वभौमिक व्याकरण के नियम और भाषा का अनुभव दोनों ही ज़रूरी है ।

भाषा के तंत्र की वर्णना कर उसकी व्याख्या इस तरह से कर पाना कि लोगों को भाषा–अर्जन की प्रक्रिया की समझ आये, Generative Syntacticians का ध्येय है ।

*****

इन्ट्रोडकशन टु गवर्नमेन्ट एन्ड बाइन्डिंग
लिलियन हेगेमान (Chapter 1 Part)

<u>व्याकरण –– नियमों और सिद्धान्तों का एक तंत्र</u>

किसी भाषा के व्याकरण की रचना क्या है। ध्यान दे हम उस व्याकरण की बात नहीं कर रहे है जो हम स्कूली किताबों में देखते हैं । हम उस व्याकरण की बात कर हैं जो हमारे मस्तिष्क में मौजूद है । तो प्रश्न ये है कि हमारे मस्तिष्क के व्याकरण की रचना क्या है? मान लीजिये कि हम ये कहे कि इस व्याकरण की रचना हमारे भाषा के सभी सही वाक्यों कि सूची से की गई है । जो भी वाक्य हम सुनेंगे उसे हम इस सूची के वाक्यों से मिलायेंगे, अगर ये वाक्य हमारे मस्तिष्क के सही वाक्यों की सूची में मिले तो इसका मतलब कि वो वाक्य व्याकरणिक हैं । तो फिर व्याकरण सही वाक्यों की एक तालिका या चेकलिस्ट है ।

पर ऐसा नहीं है ये हम सब समझ सकते हैं । एक तो किसी भी भाषा के सारे सही और व्याकरणिक वाक्यों की सूची बनाना नामुमकिन है । दूसरी बात ये है कि इस सूची से हमें भाषा की समझ नहीं मिल सकती, इस समझ के लिये हमें भाषा के नियमों को पकड़ना पड़ता है । हमारी स्मृतिशक्ति सीमित होती है । हम चीज़ें / बातें भूल जाते हैं । इस सीमित स्मृतिशक्ति के होते हुये ये संभव नहीं है कि हम भाषा के हर व्याकरणिक वाक्य को याद रखें जो की एक असीमित संख्या है । इसके बदले हम ये मान के चल सकते हैं कि हमारे पास एक सीमित नियमों का तंत्र है जो हमें ये यह बताता है कि भाषा में सही वाक्य क्या है और गलत क्या । यही हमारे मस्तिष्क

के व्याकरण का स्वरूप है । भाषावैज्ञानिक का कार्य इस नियम के तंत्र को समझना है ।

Explanatory Adequacy और भाषा अर्जन

भाषा के तंत्र की वर्णना के तीन स्तर है । किसी भाषा के नियमों को पकड़कर उसे दर्ज करना पहला स्तर है सिर्फ इतना करने से हम कहते हैं कि इस व्याकरण को observational adequacy मिली है । सरल तरीके से बोले तो ये कहेंगे कि जो भाषा में चल रहे नियम है उन्हें हमने देखकर लिख दिया है । इसके आगे जब हम इन नियमों की व्याख्या कर देते हैं तो इस व्याकरण को descriptive adequacy मिलती है ।

मान लीजिये कि हमनें अपनी भाषा के नियम के तंत्र का वर्णन कर दिया है और ये मान लिया गया है कि ये तंत्र भाषा जानने वाले के भाषाई ज्ञान का प्रतीक है । जब इस व्याकरण को हम व्याख्या के स्तर से ऊपर ले जाते है तो अगला प्रश्न ये आता है कि ये ज्ञान हमारे पास कैसे आता है।

भाषा बोलने वालों को भाषा के नियमों का ज्ञान होना बिल्कुल ज़रूरी नहीं है । बिना सिखाये ही दुनिया भर के अलग–अलग भाषा के लोग अपनी भाषा सीख जाते हैं । छह साल की उम्र तक आते–आते इंसान अपनी पहली भाषा अच्छी खासी बोल लेता है ।

ये तो जाहिर है कि कोई भी मनुष्य अपने भाषा के सारे नियम जान कर नहीं आता । ये नियम सिखाये नहीं जाते, न ही हम ये कह सकते हैं कि मनुष्य इन सारे नियमों को अपने आस–पास से सीखता है । हमारे भाषा की इस विशाल क्षमता को समझाने कि लिये एक ही उपाय है और वो ये कि हम ये मान ले कि काफी कुछ हमारे मस्तिष्क में पहले से ही मौजूद है । इसी ज्ञान को समझने की कोशिश generative linguists करते हैं ।

ये बात भी कहना ठीक नहीं होगा कि मनुष्य के पास अपनी पहली भाषा या मातृ भाषा का ही अन्दरूनी ज्ञान होता है । जापानी मनुष्य के पास जापानी का ज्ञान और अंग्रेजों के पास का ज्ञान नहीं होता । ये ऐसा ज्ञान है जो हर भाषा का आधार है किसी एक भाषा का नहीं ।

Poverty of Stimulus

मनुष्यों के भाषा का ज्ञान अचेत होता है । इस ज्ञान को व्याकरण का रूप दिया जाता है । किसी भाषा के व्याकरण से उस भाषा के वाक्य बनते है । भाषा–वैज्ञानिक का काम मनुष्य के मस्तिष्क के व्याकरण की वर्णना

करना है । इस तरह व्याकरण की वर्णना करने के लिये भाषा–वैज्ञानिक आम बोल–चाल से वाक्य ले सकते हैं । इस तरह से मिले वाक्य हमारे भाषाई क्षमता का बहुत छोटा हिस्सा होते हैं । व्याकरण की वर्णना करने के लिए ये ज़रूरी है कि मनुष्य की पूरी भाषाई क्षमता की जाँच की जाय । जैसे कि उनकी अपनी भाषा के वाक्यों के बारे में सही या गलत का निर्णय । जैसे कि हिन्दी भाषी ये अच्छी तरह जानते हैं कि नीचे दिये हुये वाक्यों में पहला वाक्य सही है और दूसरा वाक्य गलत ––

सीता घर गई
सीता घर गया

हम यहाँ कह सकते हैं कि दूसरा वाक्य गलत इसलिये है क्योंकि कर्ता *सीता* स्त्रीलिंग है और इसलिये क्रिया का भी स्त्रीलिंग रूप दूसरे वाक्य में होना चाहिये ।

अंग्रज़ी में ऐसा नहीं होता । कर्ता के स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होने से क्रिया का रूप नहीं बदलता जैसे –

Sita went home
Ram went home

व्याकरण के वर्णना में descriptive adequacy तब मिलेगी जब हम इस तरह के वाक्य संरचना के नियमों को अंकित कर पाये । जैसे हिन्दी के व्याकरण में हमें कर्ता और क्रिया के मेल का नियम अंकित करेंगे ।

अब हमारे पास ये सवाल आता है कि भाषा का इतना गहरा ज्ञान लोगों के पास कैसे आता है । हम कहेंगे कोई व्याकरण तब explanatory adequacy हासिल करता है जब उसके नियम भाषा बोलने वालों को स्पष्ट कराया जा सके, अर्थात जब वह भाषा अर्जन के प्रक्रिया स्पष्टिकरण कर पाये।

भाषा अर्जन के समस्या को Poverty of Stimulus की समस्या कहा गया है । हमारी भाषाई क्षमता हमें मिले हुये भाषाई नमूनो से कहीं ज्यादा होती है । तो सवाल ये है कि हमें भाषा का इतना गहरा ज्ञान कैसे मिलता है । भाषा–वैज्ञानिक ये दर्शाना चाहते हैं कि भाषाई नमूनों में खामियों के बावजूद हमारे भाषा का ज्ञान सशक्त होता है । तीन तरह की खामियों की बात की जाती है एक तो जो भाषा आस–पास हम सुनते हैं उसमें आधे–अधूरे

वाक्य, गलतियाँ इत्यादि हमेशा होती है। दूसरा, भाषा का अनुभव सीमित होता है पर हम असीमित वाक्य रचना करने में सक्षम होते हैं । तीसरा हम ऐसी भाषाई ज्ञान भी हासिल कर लेते हैं जिसके लिये हमें कोई नमूना नहीं मिला हो । अंग्रज़ी के इन उदाहरणों को देखिये --

I think that Miss Marple will leave
I think Miss Marple will leave

This is the book that I bought in London
This is the book I bought in London

Who do you think that Miss Marple will question first?
Who do you think Miss Marple will question first?

इन वाक्यों को देखकर लग सकता है कि अंग्रेज़ी में that शब्द हो भी सकता है और नहीं भी । पर फिर नीचे दिये हुये वाक्यों को देखिये । इनमें पहले वाक्य में that लगने से वाक्य गलत हो जाता है।

*Who do you think that will be questioned first?
Who do you think will be questioned first?

सवाल ये उठता है कि बच्चा किस तरह ये पकड़ लेता है कि ऐसे वाक्य में that नहीं लगेगा । जबकि उसके सामने गलत वाक्य कोई नहीं बोलेगा और न ही बच्चे को यह सिखाया जायेगा कि किस वाक्य में that लगाना गलत है ।

इस समस्या का सार ये निकलता है कि हमें जो भाषाई नमूना मिलता है वो हमारे भाषाई ज्ञान की तैयारी के लिये काफी नहीं है । हम भाषाई ज्ञान अर्जन को इस प्रकार नहीं दिखा सकते --

भाषा सक्रिय करने वाले अनुभव --> X का व्याकरण

सार्वभौमिक व्याकरण

ऊपर कहे गये बात को समझने के लिये हम कुछ उदाहरण देखें । एक ऐसा नियम है अंग्रजी का कि किसी भी सरल वाक्य के साथ और एक वाक्य जोड़कर बड़ा वाक्य बनाया जा सकता है । जैसे कि ––

who saw them

I wonder who saw them

अब ये नियम सिर्फ अंग्रज़ी पर ही लागू नहीं होती बल्कि हर भाषा पर लागू होती है । आप हिन्दी में भी इस नियम को देख सकते हैं ।

उन्हे किसने देखा
मुझे मालूम नहीं कि उन्हे किसने देखा

आप को जो भी भाषा मालूम हो आप उस भाषा में ये देख सकते हैं । इस नियम को embedding principle कहा जाता है और ये एक सार्वभौमिक नियम है यानी कि ये दुनिया के हर भाषा पर लागू होता है । ऐसे नियम जो हर भाषा पर लागू होते है वो सार्वभौमिक व्याकरण का हिस्सा होते हैं । सार्वभौमिक व्याकरण उन सभी नियमों और सिद्धान्तों से बना है जो हर भाषा पर लागू होते हैं ।

भाषा–वैज्ञानिक नोअम चॉमस्की कहते हैं – *"हम मान सकते हैं कि सार्वभौमिक व्याकरण सिद्धान्तों का एक तंत्र है जो हर मनुष्य के पास किसी भी अनुभव से पहले मौजूद होता है ।"*

अगर हम मान ले कि हमारे पास भाषाई ज्ञान पहले से ही मौजूद है तो भाषा अर्जन की प्रक्रिया आसान हो जाती है । फिर हमें किसी भी भाषा सीखने के लिये embedding principle को सीखने की ज़रूरत नहीं होगी ।

सार्वभौमिक व्याकरण भाषा अर्जन करने का आधार है । ये व्याकरण सिर्फ मनुष्य जाती के पास ही होती है । क्योंकि ये व्याकरण जानवरों के पास नहीं होती इसलिये कुत्ते, तोता या चिंपाज़ी मनुष्यों की भाषा नहीं सीख

पाते हैं ।

पैरामीटर और सार्वभौमिक व्याकरण

हमारे पास सार्वभौमिक व्याकरण के रूप में जन्मजात भाषाई क्षमता है पर इसका मतलब ये नहीं कि भाषा के ज्ञान के लिये सिर्फ सार्वभौमिक व्याकरण काफी है । अगर ऐसा होता तो हर कोई बिना भाषा सुनकर दुनिया कि हर भाषा बोलने लगता । किसी अंग्रेज़ बच्चे को हिन्दी बोलने वाले घर में पाला जाय तो वह हिन्दी बोल लेगा क्योंकि हर भाषा सीखने की क्षमता उसमें जन्मजात है । पर वही बच्चा जापानी अपने आप नहीं सीखेगा जब तक वह जापानी बोलने वालों के बीच न रहे । भाषा सीखने के लिये उस भाषा के संस्पर्श में आना ज़रूरी है ।

दुनिया के विभिन्न भाषाओं में सार्वभौमिकता है पर उसी साथ उनमें फर्क भी है । अंग्रज़ी का व्याकरण हिन्दी से अलग है । एक व्याकरण जानने से दूसरा व्याकरण अपने आप नहीं आ जाता । अंग्रेज़ी के वाक्यों में शब्द SVO यानी subject, verb, object इस तरह से आते हैं । जैसे इस वाक्य में ––

John hit Mary

यहां John subject यानी कर्ता है, hit verb यानी क्रिया है और Mary object यानी कर्म है । अब हिन्दी में यही वाक्य देखिये ––

जॉन ने मेरी को मारा

आप देख सकते हैं कि अंग्रेज़ी वाक्य और हिन्दी वाक्य में फर्क ये है कि हिन्दी वाक्य में object मेरी, verb पसन्द करता है से पहले आता है । हिन्दी वाक्य में शब्द Subject Object Verb इस क्रम में आते हैं।

अलग–अलग भाषाओं के अलग–अलग शब्द क्रम होते हैं । अंग्रज़ी, हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में कर्ता, कर्म, क्रिया की धारणायें होते हैं ये बात सार्वभौमिक है पर ये किस भाषा में किस क्रम से आयेंगे ये उस भाषा के पैरामीटर पर निर्भर करता है । इस पैरामीटर को हम *शब्द–क्रम पैरामीटर* (Word Order Parameter) कह सकते हैं । जब बच्चा भाषा अर्जन करता है तो वो अपने आस–पास की भाषाओं के हिसाब से ये पैरामीटर तैयार कर लेता है ।

अपनी भाषा का व्याकरण तैयार करते वक्त बच्चा सार्वभौमिक सिद्धान्तों का इस्तेमाल करता है । इसके साथ–साथ अपने परिवेश की भाषा से वह उस भाषा के ख़ास नियम निकालता है । अंग्रज़ी परिवेश में पल रहा बच्चा अंग्रज़ी का SVO शब्द क्रम तैयार कर लेता है और हिन्दी परिवेश में पल रहा बच्चा हिन्दी का SOV शब्द क्रम तैयार कर लेता है ।

भाषा के संस्पर्श में आना भाषाई ज्ञान के लिये ज़रूरी है । इस संस्पर्श के बिना बच्चे के लिये भाषा के अन्दरूनी व्याकरण की रचना करना असंभव है । बिना इसके बच्चा SOV और SVO में चुन नहीं पायेगा । सार्वभौमिक व्याकरण में फिर दो बातें हुई ––

एक तो ये कि इस व्याकरण में सार्वभौमिक नियम और सिद्धान्त यानी principles है जो हर भाषा में मौजूद है।

दूसरा ये कि इस व्याकरण में ऐसे भी नियम है जो हर भाषा में अलग है । इन सारे नियमों में से आप अपनी भाषा के नियम चुन लेते इनको हम पैरामीटर (parameters)कहते हैं । और भाषा में शब्द–क्रम एक ऐसा पैरामीटर है ।

भाषा सीखना किसी बच्चे के लिये कोई बड़ा काम नहीं है । उसके पास सार्वभौमिक व्याकरण के सार्वभौमिक सिद्धांत (principles) मौजूद होते है और साथ ही वे नियम जिनमें से उसे अपनी भाषा के नियमों को चुनना है । भाषाई ज्ञान के लिये वह इन नियमों का चुनाव कर लेता है । इसलिये जब हम बच्चे के भाषा सीखने की बात करते हैं तो हम सीखना नहीं अर्जन करना कहते हैं क्योंकि वो भाषा सीखता नहीं है । उसके पास सार्वभौमिक व्याकरण होता है और वो अपने आस–पास की भाषा सुनकर उस भाषा का व्याकरण अपने–आप तैयार कर लेता है ।

इसके अलावा भाषा सुनने से बच्चा भाषा के शब्द भी सीखता है । भले ही उसके पास भाषा के सिद्धांत मौजूद हो, इन सिद्धांतों का इस्तेमाल करने के लिये उन्हें शब्दों की ज़रूरत पड़ती है और शब्दों का ज्ञान भाषा सुनने से ही उसे मिलता है ।

<u>भाषा सीखना और भाषा अर्जन</u>

अब तक बताये गये भाषा अर्जन की प्रक्रिया को हम इस प्रकार दर्शा सकते हैं --

भाषा सक्रिय करने वाले अनुभव --> सार्वभौमिक व्याकरण (पैरामीटर के साथ) --> X भाषा का मूल व्याकरण

जब बच्चा भाषा सुनता है तो उसके अन्दरूनी सिद्धांत सक्रिय हो जाते हैं । बच्चा उस भाषा के अनुसार नियम चुन लेता है जैसे कि उस भाषा में क्रिया के पहले कर्म आता है ।

नोअम चॉमस्की के अनुसार -- *"सिद्धांतों के सहायता से, एक तंत्र जिसको पर्याप्त अनुभव मिला हो वह मनुष्य के खास भाषा का व्याकरण बना लेगा ... बिना सिद्धांतों के ये तंत्र कोई व्याकरण नहीं बना पायेगा अथवा कुछ और तंत्र बनायेगा । टेलीफोन एक्सचेंज ने हम में से हर एक से ज़्यादा अंग्रज़ी भाषा सुनी है पर सार्वभौमिक व्याकरण के न होते हुये वह अंग्रज़ी व्याकरण को अपने अन्दरूनी संरचना का हिस्सा नहीं बना पायेगा ।"*

छह साल की उम्र तक एक बच्चा जिसने अपने आस-पास हिन्दी सुनी हो वो हिन्दी का व्याकरण रचना कर लेगा । इसका मतलब ये नहीं कि इससे आगे उसमें भाषा का विकास नहीं होता । हम भाषा के शब्द उम्र भर सीखते हैं । इसके अलावा हम अपनी भाषा के कठिन और अप्रायिक संरचनायें भी सीखते हैं । इसके साथ ही हम ये भी सीखते हैं कि किस परिवेश में हमें किस तरह की भाषा का उपयोग करना है । कैसे कुछ शब्द साधारण बोलचाल में इस्तेमाल होते हैं और कैसे कुछ शब्द बहुत औपचारिक स्थिति में इस्तेमाल होते हैं । ये सब चीजें व्याकरण का हिस्सा नहीं हैं । ये मनुष्य के सामाजिक व्यवहार से ताल्लुक रखते हैं ।

Generative Syntacticians का ध्येय एक ऐसा सिद्धांत तैयार करना है जो भाषा-अर्जन का प्रतिरूप हो। भाषावैज्ञानिक इन तीन अंगों की पूरी तरह से व्याख्या करना चाहते हैं -- (1) सार्वभौमिक व्याकरण के सिद्धांत और अलग-अलग भाषा के पैरामीटर (2) सार्वभौमिक व्याकरण को सक्रिय करने वाले अनुभव (3) इन अंगों के पारस्परिक क्रिया से तैयार हुआ भाषाओं का व्याकरण । जो थियोरी इन तीन तत्वों को समझा पायेगा वही थियोरी व्याख्यात्मक रूप से पर्याप्त माना जायेगा (explanatory adequacy)

****